दादी मनोहर इन्द्रा जी की विशेषतायें

यज्ञ पिता, यज्ञ माता की अति लाडली, यज्ञ की आदि रतन दादी मनोहर इन्द्रा जी सर्व गुणों की खान थी। उनके गुणों वा विशेषताओं का वर्णन शब्दों में करना जैसे सूर्य को दीपक दिखाना है।

1. दादी जी सदा आज्ञाकारी सर्विसेबुल

साकार बाबा की मुरली में जब कभी सर्विसेबुल बच्चों के नामों का वर्णन आता तो दादी मनोहर इन्द्रा जी का नाम पहले नम्बर पर होता था। दादी जी सदा बाबा की आज्ञाकारी हाँ जी का पाठ पढ़ने वाली थी। बाबा ने सेवा के प्रति जहाँ भी भेजा वहाँ दादी जी हाँ करके तुरन्त गई।

2. त्याग तपस्या की चैतन्य मूर्ति

सेवा के प्रारम्भ में आपने जमुना के कण्ठे पर बैठकर बिना कोई साधन-सुविधा के सेवाओं का प्रारम्भ किया। कभी कोई सैल्वेशन नहीं मांगी। सदा त्याग और तपस्या की मूर्त बनके रही। बाबा उन्हें प्यार से हरगंगे नाम से पुकारता था, क्योंकि दादी का लौकिक नाम हरी था। उनकी बहुत समीप सखी गंगे दादी कानपुर थी। दोनों दादियों ने सेवा में सदा आगे रहकर पतित पावनी बन अनेक आत्माओं का उद्धार किया। दादी की दृष्टि में अलौकिक जादू था, शुरू-शुरू में दृष्टि से साक्षात्कार के पार्ट चलते थे। दादी जी योग कराती और जिसे भी दृष्टि देती वो ध्यान में चले जाते थे। ऐसी दृष्टि में रुहानियत और अलौकिकता थी। पंजाब और हरियाणा में विशेष करनाल में रहकरके आपने बहुत समय तक अपनी सेवायें दी। अनेक कुमारियाँ आपकी स्नेह की पालना से ज्ञान में आई और एक आदर्श बी.के. बन आज भारत के विभिन्न स्थानों पर अपनी सेवायें दे रही हैं।

3 जितनी निर्मान उतनी सम्मान दाता

दादी जी सदा अपने को निमित्त समझ नम्रचित्त बनकर रहती। अपने सरल स्वभाव की छाप सहज ही हरेक के दिल पर डाल देती थी। सबको दिल से सम्मान देती, दादी के पास कभी भी कोई सरल भाव से पहुंच जाता था। दादी बहुत स्नेह से उससे मिलती और थोड़े से वरदानी मधुर बोल से उसे भरपूर कर देती थी।

4. मिलनसार और रमणीक

जैसे सब्जियों में आलू हर सब्जी के साथ मिक्स हो जाता ऐसे दादी के लिए भी कहते यह इतनी मिलनसार है जो किसी के साथी भी एडजेस्ट हो सकती हैं। कभी किसी से न टकराव में आई न किसी के प्रभाव में आई। एक बाबा दूसरा न कोई इसकी प्रभाव में रहकर सबको एक बाबा में विश्वास बिठाया। बहुत रमणीकता से हरेक के साथ रुहरिहान करती, दादी को कभी सीरियस नहीं देखा।

5.स्पष्ट और मधुर वक्ता

दादी जी को बाबा का जीवन वृत्तान्त ऐसे याद था जो बहुत स्पष्ट शब्दों में पूरा यज्ञ इतिहास हूबहू वर्णन कर देती। यज्ञ की स्थापना कैसे हुई, प्रगति कैसे हुई, कौन कब यज्ञ में समर्पित हुआ,बाबा की क्या-क्या लीलायें चली, दादी उसे अंगे अक्षरे स्पष्ट सुनाती थी। जिससे हरेक के दिल में बाबा के और यज्ञ के प्रति प्यार पैदा हो

जाता। किसी भी विषय पर दादी जी बहुत स्पष्ट शब्दों में अपने विचार व्यक्त करती। और उसे परमात्म अवतरण की जानकारी दे दती। मुरली सुनाते बीच में प्रश्न पूछकर इतना रमणीक वायुमण्डल बना देती जिससे सभी रिफ्रेश हो जाते। दादी में गीत गाने की भी बहुत अच्छी कला थी।

6. अटूट निश्चय, निश्चिन्त और सदा निर्भय

दादी जी का स्वयं में, बाबा में, कल्याणकारी ड्रामा की हर सीन में, ज्ञान की एक-एक प्वाइन्ट में इतना निश्चय था जो कोई भी बात व परिस्थिति सामने आई लेकिन आपके चेहरे पर कभी प्रश्नात्मक चिन्ह नहीं देखे। बाबा बैठा है सब ठीक होगा, इतना विश्वास था। बाबा ने कहा है हो जायेगा। आपके जीवन से निश्चिन्तता और निर्भैयता की झलक स्पष्ट दिखाई देती थी।

7. निर्दोष दृष्टि निष्छल भावना

दादी कभी किसी की बातों को दिल में कभी नहीं रखती। कोई किसी की बात सुनाकर जाये या कोई कुछ गलत बोल कर भी जाये तो दादी जी उसे निर्दोष भावना से ही देखती। दादी के मुख से कभी कटु वचन कठोर वचन नहीं सुने। आपके शुभ निष्छल भावनाओं का प्रभाव चारों ओर वायुमण्डल में फैला रहता इसलिए दादी से किसी को भय नहीं लगता।

8. सबकी प्यारी, सबसे न्यारी

दादी जितना बापदादा की, दादियों की प्रिय थी उतना सारे ब्राह्मण परिवार की भी प्रिय थी। दादी से हरेक को अपनेपन की भासना आती। सबको रुहानी प्यार की अनुभूति कराते सदा न्यारी रही। दादी की नेचर लविंग और डिटैच थी।

9. सदा गुणग्राही

हरेक की विशेषतायें देखकर उन्हें सेवा में लगाती। उनकी प्रशंसा करके बाबा के कार्य में मददगार बना देती। कोई में कोई कमी भी हो तो भी उसका वर्णन नहीं करती। और ही उसको अपना स्नेह देकर गुणवान बना देती।

10. विदेही अशरीरी स्थिति के अभ्यास पर विशेष ध्यान

कुछ दिनों से दादी का विशेष इन महावाक्यों पर ध्यान था। वे जब भी क्लास कराती वा भाई-बहनों से मिलती तो पांच मिनट और 10 मिनट अशरीरीपन की ड्रिल हरेक को अवश्य कराती थी। अन्तिम समय में आप विशेष अशरीरी पन का अभ्यास निरन्तर करती रही। चारों सब्जेक्ट पर आपका पूरा ध्यान था। आप हर सब्जैक्ट के अनुभव की अथॉरिटी थी।

ऐसी दादी आज हम सबके बीच से साकार वतन छोड़ अव्यक्त वतनवासी बन गई। यह भी एडवान्स पार्टी में तीव्रता का संकेत है। हम सभी उनकी विशेषताओं को जीवन में धारण कर तथा उनके द्वारा मिली हुई दिव्य पालना का रिटर्न देते रहेंगे, यही उनके प्रति सच्ची-सच्ची श्रद्धांजली है। ओम् शान्ति।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com